लिखाई:- मुखड़ा देख ले प्राणी... ओम शान्तिः प्रातःक्लास सोमवार 3-1-1978
बच्चों ने गीत सुना। इनका अर्थ भी फिर जानना चाहिये कि कितना पाप बच रहे है। कितने पुण्य जमा है। अर्थात आत्मा को सतोप्रधान बनाने मे कितना समय है। अभी कितना तक पावन बने है। यह समझ तो सकते है। चार्ट मे कोई लिखते है कि हम दो-तीन घन्टे याद करते है। कोई लिखते है कि एक घण्टा। यह तो बहुत कम हुआ। याद कम करेंगे तो पाप भी कम कटेंगे। अभी तो पाप बहुत है ना जो कटे नही है। आत्मा को ही प्राणी कहा जाता है। तो अबबाप कहते है कि हे आत्मा अपने से पूछो कि इस समय इस हिसाब से कौन कितने पाप कटेंगे। चार्ट से पता पड़ता है कि हम कितने पुण्यात्मा बने है। यह तो बाप ने समझाया ही है कि कर्मातीत अवस्था तो अन्त मे ही होगी। याद करते-2 आदत पड़े जावेगी फिर पाप जल्दी कटने लग जावेंगे। अपनी ही नाँच करनी है कि हम कितना बाप की याद मे रहते है। इसमे गप्पें मारने की बात नही है। यह तो अपनी जाँच करनी होती है। बाबा को अपना चार्ट लिख कर देंगे तो बाबा झट बतावेंगे कि यह चार्ट ठीक है या नहीं। असामी चलन की सर्विस देख बाबा झट बतावेंगे बार 2 याद कईयों की रहती होंगी जो म्युज़ियम वा पर्दशनो के सर्विस में रहते है, म्युजियम तो सारा दिन आवात-जावात रहता है। देहली मे बहुत आते रहेंगे। बार2 बाबा का परिचय देना पड़ेगा। समझो किसको तुम कहते हो विनाश मे बाकी 8-9 वर्ष है कहते हैं यह कैसे हो सकता। हमारा विचार नहीं कहता। फ्ट से कहना चाहिए यह हम कोई थोड़े ही बताते है। भगवानुवाच है ना। भगवानुवाच तो जरूर सत्य ही होगा ना। इसलिए ही बाबा समझाते है बार2 बोलो यह शिव बाबा की श्रीमत पर है। हम नहीं कहते हैं। श्रीमत उनकी ही है। वह है ही ट्रूथ। पहले2 तो बाप का परिचय जरूर देना पड़ता है। इसलिए बाबा ने कहा है हरेक चित्र में लिख दो शिव भगवानुवाच। वह तो एक्युरेट ही बतावेंगे। हम थोड़े ही जानते थे। बाप ने बताया तब हम श्रीमत कहते हैं कि 8-9 वर्ष है। कब कब अखबार में भी डालते है फलाने ने भविष्य की है कि विनाश जल्दी होगा। अब तुम हो बाप के बच्चे। स्टूडन्ट हो ना। प्रजापिता ब्रह्मा कुमार कुमारियां तो बेहद के हैं ना। तुम बतावेंगे हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। वही पतित पावन ज्ञान का सागर है। पहले यह बात बता पक्का करा फिर आगे बढ़ना चाहिए। शिव बाबाने यह कहा है। यादव कौरव आद विनाश काले विपरीत बुधि शिव बाबाने कहा है। शिव बाबा का नाम लेते रहेंगे तो इसमें बच्चों को ही कल्याण है शिव बाबा को ही याद करते रहेंगे। बाप ने जो तुमको समझाया है वह तुम फिर औरों को समझाते रहो। तो सर्विस करने वालो का चार्ट अच्छा रहता होगा। सारे दिन में 8 घन्टा सर्विस में बिज़ी रहते हैं। कर के एक घन्टा रेस्ट लेते होंगे। फिर भी 7 घन्टा तो सर्विस में रहते ही हैं। तो समझना चाहिए उनके विकर्म बहुत विनाश होते होंगे। बहुतों को घड़ी2 बाप का परिचय देते होंगे। तो जरूर ऐसे सर्विस एबुल बच्चे ही बाप को भी प्रिय लगेंगे। बाप देखेंगे यह तो बहुतों का कल्याण करते हैं। रात दिन यही उनको चिन्तन है हम बहुतों का कल्याण करें। बहुतों का कल्याण करते हैं सो अपना कल्याण करते हैं। स्कारशिप भी इसमें मिलेगा जो बहुतो का कल्याण करते होंगे। तुम बच्चों को तो यही धंधा है। टीचर बन बहुतों को रास्ता बताना है। पहले तो यह नालेज धारण करनी पड़े। कोई का कल्याण नहीं करते हैं तो समझा जाता है इनके तकदीर में नहीं है। बहुत बच्चे तो कहते हैं बाबा हमको नौकरी से छुड़ाओ। हम इस सर्विस में लग जावें। बाबा भी देखेंगे बरोबर की पूंजी है। बन्धन मुक्त भी हैं। तब कहेंगे भले 500 कमाने से इस सर्विस मे लग बहुतों का कल्याण करें। अगर बन्धन मुक्त है तो भी बाबा सर्विस एबुल देखेंगे तो राय देंगे। सर्विस एबुल बच्चों को जहां-तहां बुलाते रहते हैं। तो समझना चाहिए यह मेरे से अच्छा महारथी हैं। स्कूल में स्टूडन्ट्स जानते हैं ना यह भी पढ़ाई है 'यह कोई कामन सतसंग नहीं है। सत्य माना ही सत्य बोलने वाला। हम श्रीमत पर आप को यह समझाते है। ईश्वर की मत अभी तुमको मिलती है? बाप कहते हैं बच्चे तुमको

3-1-68

तुमको वापस जाना है। अब बेहद का सुख ो वर्सा लो। कल्प-2 मे तुम ो मिलता ही आया है। क्योंकि स्वर्ग की स्थापना तो कल्प-2 ही होती है नां। यह किसीको भी पता नही है कि 5000वर्ष मे चक्र रिपीट करता है। मनुष्य तो बिलकुल ही घोर अन्धेरे मे है। अभी तुम तो घोर सोझरे मे हो। जानते हो कि सवर्ग की स्थानना तो बाप ही करेंगे। यह तो गायन भी है कि भांभोर को आग लग गई तो भी अज्ञान नीद मे सोये रहे। भक्ति को अज्ञान मार्ग कहा जाता है। यह है ही ज्ञान। बेहद का बाप ही ज्ञान का सागर। ऊंच ते ऊंच बाप के काम भी ऊंचे है। ऐसा नही कि परमात्मा तो सर्वव्यापी है। जो भी चाहे सो करे। नही। यह भी ड्रामा अनादी बना हुआ है। सब कुछ ड्रामा अनुसार ही चलता है। लडाई मे आग मे भी कितने ही मरते है। यह भी ड्रामा की ही नूंध है। इसमे भगवान क्या कर सकते है? अग्नि कुदरत होती है फिर कितना शोर करते है कि हे भगवान। परन्तु भगवान क्या कर सकते है। भगवान को तो तुमने बुलाया ही है कि आकर विनाश करो। पतित दुनियां मे ही बुलाया है नां। स्थापना करके और सभी का विनाश करो। मै विनाश नही करता हूं। यह तो ड्रामा मे ही नूंध है। खूने नाहक खेल हो जाता है। इसमे तो कुछ आद की बात ही नही है। तुमने ही कहा है कि पावन दुनियां बनाओ। तो जरूर पतित आत्मायें जोबगी ही नां। काई तो बिलकुल ही समझते नही है। श्रीमत का भी अर्थ नही समझते है तो बन्दर हुये नां। एक दम ही 100% पत्थर बुधी। भगवान क्या है ड्रामा क्या है कुछ भी समझते नही है। कह देते है कि मनुष्य जो कह देवे सो ही होगा। इसको ही कहा जाता है पत्थर बुधी। कोई बच्चा ठीक नही पढ़ता है तो मांबाप कह देते है कि तुम तो जैसे कि पत्थर बुधी हो। सतयुग मे तो ऐसे नही कहेंगे। कलयुग मे तो है ही पत्थर बुधी। पारस बुधी यहां पर तो कोई भी हो नही सकता है। आजकल तो देखो मनुष्य पा-2 ही करते रहते है। एक हटि कि निकाल कर दुसरा डाल देते है। अच्छा इतनी मेहनत करके फिर क्या किया। परन्तु इससे फायदा ही क्या होगा। बहुत रिधी सिधी सीख कर आते है। फायदा तो कुछ भी नही। भगवान को तो याद ही इस लिये करते है कि हमको आकर पावन दुनियां का मालिक बनाओ। हम पतित दुनियां मे रह कर दुःखी हो गये है। सतयुग मे तो कोई भी बिमारी दुःख आद की बात ही नही होती है। अभी बाप दवारा ही तुम कितना ऊंच पद पाते है। पढाई ही से एम-पी आद बनते है। कितने भभके से मगरूरी मेरहते है। बहुत खुश रहते है। तुम बच्चे समझते हैं बाकी थोड़े राज जियेंगे। पापों का बोझा तो सिर पर बहुत हैं। बहुत सज़ाएं खायेंगे। पतित तो अपने को कहते हैं। विकार मे जाना पाप नहीं समझते हैं। पापात्मा ते बनते हैं ना। कहते हैं गृहस्थ आश्रम तो अनादी चला आता हैं। समझा जाता हैं सतयुग त्रेता में गृहस्थ आश्रम था। पापात्मायें नहीं थी। यहां तो भ्रष्टाचारी पापात्मायें हैं। इसलिए दुःखी हैं। एम पी आद बनना तो अल्प काल का सुख हैं। बिमार हुआ यह गया। मौत तो मुंह खोल खड़ी हैं। अचानक हार्ट फेल हो जाता हैं। यहां है ही अल्प काल काग बिष्टा समान सुख। वहां तो तुमको अथाह सुख हैं। तुम सारे विश्व के मालिक बनते हो। कोई प्रकार का दुःख न होगा। न गर्म हवा न ठंडी हवा होगी। देव बहार होगी। तत्व भी अदली मे रहते हैं। स्वर्ग मो स्वर्ग हैं ही हैं। रात-दिन का फर्क हैं। स्वर्ग के लिए ही बुलाते हैं। आकर पावन दुनिया स्थापन करो। हमको पावन बनाओ। बाबा मुरली मे डायरेक्शन देते रहते हैं। शिवबाबा कहते हैं यह तो हरेक चित्र पर लिख दो। तो बार2 शिव बाबा याद आवेंगे। ज्ञान भी देते रहेंगे म्युज़ियम अथवा प्रदर्शनी के सर्विस मे (ज्ञान और योग) दोनो इकट्ठे चलते हैं। याद मे रहने से नशा रहेगा। तुम पावन बन सारे विश्व को पावन बनाते हो। तुम पावन बनते हो पावन सृष्टि जरूर चाहिए। पिछाड़ी मे कयामत का समय होने कारण सब का हिसाब किताब चूकुत हो जाता हैं। तुम्हारे लिए हमको नई सृष्टि का उद्घाटन करना पड़ता हैं। फिर ब्रन्चेज खोलते रहते हैं पवित्र बनाने लिए। नई दुनिया सतयुग का फाउन्डेशन तो कोई डाल न सके। तो इस बाप को याद भी करना चाहिए ना। तुम म्युजियम आद का उद्घाटन बड़े2 आदमियों से कराते हो तो आवाज़ होगा। मनुष्य समझेंगे यहां बड़े2 लोग भी आते हैं। कोई

कहते हैं तुम लिख कर दो तो हम बोलेंगे। वह भी रांग हो गया। अच्छी रीत समझ कर ओरली बोले तो अच्छा हैं। बहुत हैं जो लिखत में लिख पढ़ कर सुनाते हैं। तो एक्युरेट हो। तुम बच्चों को तो ओरली समझाना हैं। तुम्हारी आत्मा में सारी नालेज हैं। तुम फिर औरों को देते हो। प्रजा बुधि को पाती रहती हैं। आदमशुमारी भी बढ़ती जाती हैं। सभी चीज़ बढ़ते रहते हैं। झाड़ सारा जड़-जड़ी भूत हो गया हैं। जो अपने धर्म वाले होंगे वह निकल आवेंगे। नम्बरवार तो हैं ना। एक रस सभी नहीं पढ़ सकते। कोई तो 100 से एक मार्क भी उठाते हैं। थोड़ा भी सुन लिया, एक मार्क मिली। आ जावेंगे। यह हैं बेहद का पढ़ाई जो बेहद का बाप ही पढ़ाते हैं। जो इस धर्म के होंगे वह निकल आवेंगे। पहले तो सब को मुक्ति धाम अपने घर जाना हैं। फिर नम्बरवार आते रहेंगे। कोई तो त्रेता के अन्त तक भी आवेंगे। भल ब्राह्मण बनते हैं, ब्राह्मण कोईसभी सतयुग में नहीं आते। त्रेता अन्त तक आवेंगे। फिर सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी खलास हो जावेंगी। फिर गिरते हैं। यह सब समझने की बातें हैं। बाबा जानते हैं राजधानी स्थापन होती हैं। सभी एक रस हो न सके। राजाई में तो सब वैराईटी चाहिए ना। राजधानी को अन्दर, या प्रजा को बाहर या कहा जाता हैं अन्दर रहने वाले राजाई डिनायस्टी में रहते हैं। बाबा ने समझाया था वहां वजीर आद की दरकार नहीं रहती। इन्हों को श्रीमत मिली जिससे यह बनें। फिर यह थोड़े ही कोई से राय लेंगे। वज़ीर, प्रश्नल अमीसटेन्ट आद कुछ भी नहीं होती हैं। फिर जब पतित होते हैं तो एक वज़ीर, एक राजा, एक रानी होती है। अभी तो कितने वज़ीर हैं। फुड मिनिस्टर, फलाना मिनिस्टर कितनेढेर हैं। वहां एक भी मिनिस्टर नहीं। यहां तो प्रु पंचायती राज्य हैं ना। एक की मत न मिले दूसरे से। एक से दोस्ती रखो। समझाओ काम कर देंगेदूसरा फिर आया उनको ख्याल में न आया तो और ही काम बिगार देंगे। कितना भी समझाओ मानेंगे नहीं। एक की बुधि न मिले दूसरे से। वहां तो तुम्हारी सभी कामनाएं पूरी होती है। यहां तुम ने कितना दुःख उठाया है। इसका नाम ही दुःखधाम हैं। भक्ति मार्ग में कितने धक्के खाये हैं। भक्ति मार्ग हैं ही गिरने का मार्ग। यह भी हैड्रामा। जब दुःख हो जाते हैं तब फिर बाप आकर सुख का वर्सा देते हैं। बाप ने तुम्हारी बुधि कितनी खोल दी हैं। मनुष्य तो कह देते हैं साहुकारों के लिए स्वर्ग हैं। गरीब नर्क में हैं। तुम यथार्थ रीति जानते हो स्वर्ग किसको कहा जाता हैं। सतयुग में थोड़े ही कोई रहम दिल कह बुलावेंगे। यहां बुलाते हैं रहम करो। सुख दो। लिबरेट करो। बाप ही जानते हैं शान्तिधाम सुखधाम में ले जाते हैं। अज्ञान काल में तुम भी कुछ नहीं जानते थे। जो नम्बरवन तमोप्रधान सो ही फिर नम्बरवन सतोप्रधान बनते हैं। यह अपनी बड़ाई नहीं करते हैं। बड़ाई तो एक ही हैं। लक्ष्मी-नारायण को भी ऐसा बनाने वाला तो वह हैं ना। ऊंच ते ऊंच भगवान। बनाते भी हैं ऊंच। बाबा जानते हैं सब तो ऊंच नहीं बनेंगे। फिर भी पुरुषार्थ करना पड़े। यहां तुम आते ही हो नर से नारायण बनने। कहते हैं बाबा हम तो स्वर्ग की बादशाही लेंगे। हम सत्यनारायण की सच्ची कथा सुनने आये हैं। बाप कहते हैं अच्छा तेरे मुख में गुलाब। मेहनत करो। सब तो लक्ष्मी-नारायण नहीं बनेंगे। यह राजधानी स्थापन हो रही हैं। राजाई घराणे में, प्रजा घराणे में चाहिए तो बहुत ना। आश्चर्यवत सुनन्ती, कथन्ती फरकती देवन्ती फिर चण्डाल का जन्म लेवन्ती। फिर भी आ जाते हैं और अपनी कुछ न कुछ उन्नति करते हैं। तो चढ़ पड़ेंगे। सेन्डर होते ही गरीब हैं। देह सहित और कोई की याद न रहे बड़ी मंजिल हैं। अगर सम्बन्ध जूटा हुआ होगा तो वह याद जरूर पड़ेगी। बाप को या क्या याद पड़ेगा। सारा दिनबुहद में ही बुधि रहती हैं। कितनी मेहनत करनी पड़ती हैं। बाप कहते हैं मेरे बच्चों में भी उत्तम, मध्यम, कनिष्ट हैं। दूसरे कोई आते हैं तो भी समझते हैं यह पतित दुनिया के हैं। फिर भी यज्ञ की सर्विस करते हैं तो दर देना पड़ता हैं। बाप युक्तिवाज़ तो हैं ना। नहीं तो यह हैं टावर आफ सायलेंस। होलीएस्ट आफ होली टावर। होलीएस्ट आफ होली बाप सारे विश्व को हाली बनाते हैं। बाप कहते हैं मुझे ड्रामा अनुसार आना ही पड़ता हैं। कोई का भी दोष नहीं। पतित बने हैं अब मैं आया हूं पावन बनाने। अब बनो। स्वर्ग का मालिक बनो। इस खेल में मेरा भी पार्ट हैं। सुखधाम शान्तिधाम ले जाने का। पार्ट बजाया अब अपनी उन्नति का ख्याल

3-1-68

करो। ऐसे नहीं जो ड्रामा में होगा तो हर करेंगे। पुरुषार्थ तो करना है ना। पुरुषार्थ बिगर किसको पानी भी नहीं मिल सके। तो बच्चों को बाबा राय देते हैं हमेशा शिवबाबा का नाम लेकर बोलो। बहुत हैं तो रिफ चक्कर लगा कर चले जाते हैं। शमा पर परवाना कोई जलने वाले कोई ऐसे हो पैसे पहन चले जाने वाले हैं। देवीकुल का होगा तो फिर आ जावेगा। ड्रामा अनुसार समय पर बुधि में आता है। कितने आये फिर चले गये। अभी भी कितने ढेर सेन्टर्स हैं। वृधि होती जाती है। इसमें खर्चा आद की कोई बात ही नहीं। बुधि में चक्र याद है बाप को भी याद करना है। यह टेव डालनी है। फिर धीरे-धीरे एक्के हो जावेंगे। जिनके भाग्य न होगा वह कब भी बाबा के डायरेक्शन पर नहीं चलेंगे। तकदीर में नहीं है तो फिर तदबीर क्या करेंगे। बिलकुल ही भाग्य में न है। घड़ी2 भूल जावेंगे। विचार सागर मथन तो तुम बच्चों को ही करना है। बाप को नहीं। विचार सागर मथन करेंगे अच्छे2 पाईन्ट्स निकालेंगे। फिर दूसरों को भी समझावेंगे। धारणा नहीं करेंगे तो झोली भरेगी नहीं। यह तो समझ सकते हैं। प्रदर्शनी में बच्चे कितने मेहनत करते हैं। समझाते2 गले ही घूट जाते हैं। उंच बनने लिए मेहनत भी करनी पड़ती है। सर्विस एबुल बच्चों को खुशी रहती है। समझते हैं गांव में जावें। जाकर प्रोजेक्टर पर समझावें। मलसलाईड्स आद इतने अच्छे नहीं बने हैं। योग का जौहर नहीं है तो काम भी ऐसा होता है। नहीं तो प्रोजेक्टर के चित्र बहुत ही फर्स्ट क्लास की होनी चाहिए। बाप तो समझाते पुरुषार्थ कराते रहते हैं। खबरदारी भी बहुत रखनी है। दुनिया बड़ी गन्दी है। ब्रह्माकुमारियों का नाम सुनने से फिर हाहाकार मचा देते हैं। शास्त्रों में दिखाया है कृष्ण ने जामवन्ती को चुराया, यह किया। बातें तो यहां की हैं ना। कृष्ण तो कर न सके। गाली भी यह खावेंगे। शिवबाबा को तो गाली दे न सके। गाली भी यह खावेंगे। गाली देहधारी को मिलती है। श्रीकृष्ण तो सतयुगी राजकुमार पहला प्रिन्स था। यह भी किसको पता नहीं है। तमोप्रधान दुनिया है ना। जो विश्व का मालिक सतोप्रधान था। वही अब तमोप्रधान बना है। फिर सतोप्रधान बनना है। यह चक्र सिवाय तुम्हारे और कोई की बुधि में नहीं आ सकता। गीता में श्रीकृष्ण भगवानुवाच लिख दिया है कितनी झूठ है। सर्वोत्तम गीता, उनका भगवान पुनर्जन्म रहित, उसके बदली नाम फिर श्रीकृष्ण का डाल दिया है। जो पूरे 84 जन्म लेते है। यह बात समझने भी बहुत टाईम लगता है। बड़े2 पंडित लोग समझ जायें बड़ी भारी भूल है। सो तो आगे चल कर होगा। नहीं तो इन्हीं सब की राजाई ही चली जावेगी। राजाएं भी इन सन्यासियों आद को माथा टेकते हैं। क्योंकि पवित्र हैं। दुनिया में कोई को भी पता नहीं है यह तो एक जन्म पवित्र बनते हैं फिर भ्रष्टाचार से ही जन्म लेते हैं। देवतायें तो भ्रष्टाचार से जन्म नहीं लेते हैं। वह हैं बेहद के महात्मा। यह हैं हद के। वह श्रेष्ठाचारी हैं योगबल से पैदा होने वाले। योगबल की बहुत महिमा है। परंतु कोई जानते नहीं है। सर्व का सद्गति दाता एक है तो सद्गति भी एक ही बार करेंगे न कि जन्म-जन्मान्तर करेंगे। एक ही बाप पतित-पावन निराकार है। तुम भी आत्मा निराकार हो। नंगे आये हो। यहां पार्ट बजाते पतित बने हो फिर पावन बनाने वाला जरूर चाहिए। बाप आलराउन्ड कितना समझाते हैं। परन्तु कोई कोई को माया ऐसी थप्पर मार देती है जो बात मत पूछो। यह बड़ी ईश्वरीय लाटरी है। लाटरी में टिकिट लेते हैं ना। टिकेट तो लेते हैं बाप की बनने की। फिर दौड़ी नहीं पहन सकते हैं तो गिर पड़ते हैं। यह घोड़दौड़ है। आत्मा इस रथ से पार्ट बजाती है। फिर रथ को छोड़ कर भागती है। जो याद की यात्रा में होंगे वही अच्छी रेस दौड़ेंगे। बच्चों को समझाया गया है कि मनसा में भल कितने भी तूफान आये, बहुत आवेंगे। लोग कहते हैं नाविमारी सारी बाहर निकलेंगी। बाप कहते हैं तूफान बहुत आवेंगे। खबरदार रहना है। अजन्म है। फिर मैं बता दुंगा अब थोड़ा टाईम है। फिर देख लेना कैसे पुरुषार्थ करते हैं। अभी तो कोई को निश्चय भी नहीं है। जो याद में रहते हैं वह बहुतों का कल्याण करते हैं। योग ही नहीं तो वह क्या मदद करेंगे। इसमें बड़ी विशाल बुधि चाहिए। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का याद, प्यार गुडमार्निंग।